अध्याय 01

मुद्रा और साख

इस अध्याय में...

- मुद्रा विनिमय का एक माध्यम
- मुद्रा के आधुनिक रूप
- साख
- साख की शर्तें
- भारत में औपचारिक क्षेत्रक में साख
- निर्धनों के लिए स्वयं सहायता समूह

मुद्रा विनिमय का एक माध्यम

मुद्रा का उपयोग अनेक प्रकार के लेन-देन (Several Transactions) में किया जाता है। मुद्रा के द्वारा वस्तुएँ खरीदी और बेची जाती हैं। जिस व्यक्ति के पास मुद्रा है, वह इसका विनिमय (Exchange) किसी भी वस्तु या सेवा खरीदने के लिए आसानी से कर सकता है।

वस्तु विनिमय प्रणाली

मुद्रा के आगमन से पहले लोग **वस्तु विनिमय प्रणाली**[1] (Barter System of Exchange) का पालन करते थे। वस्तु विनिमय प्रणाली के अंतर्गत दो या दो से अधिक पार्टियाँ आपसी सहमति के आधार पर वस्तुओं का प्रत्यक्ष रूप से आदान-प्रदान करती हैं (बिना मुद्रा के)। उदाहरण के लिए, एक जूता निर्माता बाजार में जूते बेचकर गेहूँ खरीदना चाहता है और एक किसान बाजार में गेहूँ बेचकर जूते खरीदना चाहता है, इस स्थिति में दोनों (किसान और जूता निर्माता) पक्ष एक-दूसरे की वस्तु खरीदकर व बेचकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। इसे **आवश्यकताओं के दोहरे संयोग** (Double Coincidence of Wants) के रूप में जाना जाता है।

वस्तु विनिमय प्रणाली का सबसे बड़ा दोष **आवश्यकताओं का दोहरा संयोग**[2] (Double Coincidence of Wants) था, क्योंकि विनिमय के लिए कोई सामान्य मूल्य निश्चित नहीं था। मुद्रा के उपयोग ने माँग के दोहरे संयोग की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। इसे **विनिमय के माध्यम** (Medium of Exchange) के रूप में स्वीकार किया गया।

मुद्रा के आधुनिक रूप

मुद्रा ऐसी वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य कर सकती है। मुद्रा के आधुनिक स्वरूप (Modern Form) में कागजी मुद्रा (Paper Money) और सिक्के (Coins) शामिल हैं। सिक्कों की शुरुआत से पहले अनाज और पशुओं जैसी विभिन्न वस्तुओं को धन के रूप में प्रयोग किया जाता था। उसके बाद सोने (Gold), चाँदी (Silver), ताँबे (Copper) आदि धातु (Metalic) के सिक्कों का प्रयोग शुरू हुआ।

मुद्रा (करेंसी)

- यह सामान्यत: धन के रूप में स्वीकार की जाती है, जिसमें सिक्के और कागज के नोट शामिल हैं। इसे सरकार द्वारा जारी किया जाता है और अर्थव्यवस्था के अंदर परिचालित किया जाता है।
- आधुनिक मुद्रा का विनिमय के अतिरिक्त कोई और अन्य उपयोग नहीं है।
- भारत में **भारतीय रिज़र्व बैंक** (Reserve Bank of India) भारत सरकार की ओर से करेंसी नोट (Currency Notes) जारी करता है।
- विनिमय के माध्यम के रूप में रुपये को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

बैंकों में निक्षेप (जमा)

- मुद्रा को एकत्रित या जमा करने का यह अन्य रूप है।
- लोग अपने नाम पर एक बैंक खाता खोलकर बैंकों में अपना अतिरिक्त पैसा जमा करते हैं।

---

1 **वस्तु विनिमय प्रणाली** (Barter System of Exchange) वह प्रणाली, जिसमें वस्तुओं का लेन-देन हो, वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाती है।

2 **आवश्यकताओं का दोहरा संयोग** (Double Coincidence of Wants) इसका अर्थ है कि व्यापारी और खरीदार एक-दूसरे को माल बेचने पर सहमति रखते हैं अर्थात् यहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है।

- बैंक जमा राशि स्वीकार करते हैं और इस पर ब्याज (Interest) भी देते हैं।
- बैंक में जमा किए गए धन को जमाकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार निकाल सकते हैं। बैंकों के साथ जमा राशि को **माँग जमा** (Demand Deposit) कहते हैं।

चेक की सुविधा

- चेक (Cheque) एक ऐसा कागज है, जो बैंक को किसी व्यक्ति के खाते से चेक पर लिखे नाम के किसी दूसरे व्यक्ति को एक विशेष रकम का भुगतान (Payments) करने का आदेश देता है।
- यह नकदी के प्रयोग के बिना भुगतानों को हल करता है।

आधुनिक बैंकिंग प्रणाली

मुद्रा और जमा का आधुनिक रूप आधुनिक बैंकिंग प्रणाली से जुड़ा हुआ है।

बैंकों की ऋण संबंधी क्रियाएँ

- बैंक लोगों की जमा राशि स्वीकार करते हैं और इस प्रकार बैंक जमा के रूप में बड़ी राशि एकत्र करते हैं।
- भारत में बैंक जमा का केवल 15% हिस्सा नकद (Cash) के रूप में अपने पास रखते हैं। ऐसा प्रावधान जमाकर्ताओं द्वारा किसी एक दिन में धन निकालने की संभावना को देखते हुए किया गया है।
- बैंक उधारकर्ताओं को अग्रिम ऋण देते हैं और इस पर उच्च ब्याज (High Interest) लेते हैं।
- कर्जदारों से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज के बीच का अंतर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।

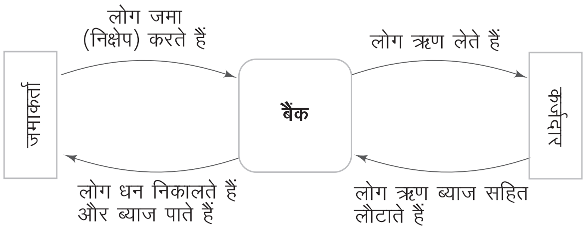

साख

साख (Credit) या ऋण से तात्पर्य एक सहमति से है, जहाँ ऋणदाता, कर्जदार (Borrower) को धन, आवश्यक वस्तुएँ एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है और बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा (Agreement) लेता है। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियों में ऐसे बहुत-से लेन-देन होते हैं, जहाँ किसी-न-किसी रूप में ऋण का प्रयोग होता है।

साख की दो विभिन्न स्थितियाँ

(i) **पहली स्थिति** इसमें उत्पादन खर्च को पूरा करने के लिए ऋण का उपयोग किया जाता है। जब उत्पादन पूरा हो जाता है, तब यह आय को बढ़ाता है। इस स्थिति में ऋण एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका (Positive Role) निभाता है।

उदाहरण—जैसे कोई व्यवसायी अपने व्यवसाय के लिए ऋण लेता है। आगे चलकर व्यवसाय में लाभ होने पर वह अपने ऋण चुका देता है। इस ऋण के माध्यम से वह अपनी स्थिति में सुधार कर पाता है।

(ii) **दूसरी स्थिति** इस स्थिति में ऋण कर्जदार को उस स्थिति में ले जाता है, जहाँ वह ऋण चुकाने में असफल हो जाता है। ऐसा अधिकांशत: ग्रामीण क्षेत्रों में होता है।

उदाहरण—जैसे किसान फसल उपजाने के लिए ऋण लेता है। उसका यह विचार होता है कि अच्छी फसल होने पर वह ऋण चुका देगा, किंतु सूखा, अतिवृष्टि या अन्य रोग एवं महामारी से फसल खराब होने पर वह ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाता है। अत: यह ऋण उसकी स्थिति में सुधार के बजाय समस्या पैदा कर देता है।

साख की शर्तें

- साख की शर्तें उन परिस्थितियों या दशाओं का एक समूह है, जिनके अंतर्गत ऋण दिया जाता है। इसमें ऋण भुगतान के तरीके, ब्याज की दर, ऋण की अवधि (Duration) और अन्य संबंधित दशाएँ शामिल हो सकती हैं।
- साख की शर्तों में **समर्थक ऋणाधार** (Collateral) अर्थात् गिरवी रखने के लिए कोई वस्तु एवं **आवश्यक दस्तावेज** (Documents Requirement) शामिल हैं। साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं।

समर्थक ऋणाधार

- ब्याज के अतिरिक्त ऋणदाता समर्थक ऋणाधार की भी माँग कर सकते हैं। समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति (Assets) है, जिसका मालिक ऋण लेने वाला होता है; जैसे—भूमि, गाड़ी, इमारत, पशु, बैंकों में पूँजी आदि।
- इस संपत्ति का प्रयोग वह ऋणदाता को गारंटी देने के रूप में करता है। जब ऋण लेने वाला व्यक्ति ऋण चुकाने में असमर्थ हो, तो ऋणदाता समर्थक ऋणाधार को बेचकर अपना भुगतान प्राप्त कर सकता है।

विविध प्रकार की साख व्यवस्था

ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत आदि पर काफी खर्च होता है। एक गाँव में विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं के लिए अलग-अलग साख या ऋण व्यवस्था हो सकती है; जैसे—

- **साहूकारों से ऋण** (Loan from Moneylenders) छोटे किसान (Small Farmer) गाँव के साहूकारों से ब्याज की उच्च दर पर पैसे उधार लेते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण वे कर्ज-जाल में फँस जाते हैं।
- **व्यापारियों से ऋण** (Loan from Traders) किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि व्यापारियों (Agricultural Traders) से ऋण मिलता है। व्यापारियों को भी किसानों से उनकी फसल को बेचने का वादा मिलता है। इस तरीके से व्यापारी सुनिश्चित करता है कि धन लाभ कमाने के अतिरिक्त अदा भी किया जाता है। वह कम कीमत पर किसानों से फसल (Crops) खरीदता है और जब कीमतें उच्च होती हैं, तो उसे बेचता है।

- **बैंकों से ऋण** (Loan from Banks) मध्यम और बड़े किसान बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। बैंक ऐसे उधारकर्ताओं को अन्य सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।
- **नियोक्ता से ऋण** (Loan from Employers) भूमिहीन (Landless) कृषि मजदूर और अन्य मजदूर ऋण के लिए अपने नियोक्ताओं पर निर्भर रहते हैं। जमींदार (Landowner) प्रत्येक महीने 5% की ब्याज दर पर मजदूरों को ऋण देते हैं और ऋण के बदले वे जमीन मालिकों के लिए काम करते हैं।
- **सहकारी समितियों से ऋण** (Loan from Co-operatives) यह ग्रामीण क्षेत्रों में सस्ते ऋण का प्रमुख स्रोत है। सहकारी समितियों के सदस्यों को कृषि उपकरण, खेती और कृषि व्यापार, मत्स्यपालन (Fisheries), घरों के निर्माण और अन्य खर्चों की खरीद के लिए ऋण प्रदान किया जाता है।

भारत में औपचारिक क्षेत्रक में साख

भारत में ऋणों को दो वर्गों **औपचारिक** (Formal) एवं **अनौपचारिक** (Informal) ऋण क्षेत्रों में बाँटा गया है। औपचारिक क्षेत्र में बैंक और सहकारी समितियाँ शामिल हैं। अनौपचारिक क्षेत्र में मित्र, रिश्तेदार, व्यापारी, साहूकार, जमींदार, बड़े किसान आदि शामिल थे। वर्ष 2012 में भारत में 1000 ग्रामीण परिवारों के साख के स्रोत इस प्रकार थे

- व्यावसायिक बैंक 25%
- सहकारी समितियाँ/बैंक 25%
- अन्य औपचारिक स्रोत 5%
- रिश्तेदार एवं मित्र 8%
- सरकारी 1%
- जमींदार 1%
- साहूकार 33%
- अन्य अनौपचारिक स्रोत 2%

औपचारिक क्षेत्र में ऋण की विशेषताएँ

यह अपेक्षाकृत कम दरों में ऋण प्रदान करता है तथा समर्थक ऋणाधार ऋण प्राप्त करने के लिए आवश्यक होता है। यह क्षेत्र मुख्यत: भारतीय रिजर्व बैंक (Reserve Bank of India, RBI) के द्वारा पर्यवेक्षित (Supervised) होता है। इसमें बैंक और सहकारी समितियाँ शामिल हैं।

औपचारिक क्षेत्र में भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका

औपचारिक क्षेत्र में ऋण प्रदान करने में भारतीय रिज़र्व बैंक की प्रमुख भूमिका है। इसकी भूमिका निम्न बिंदुओं में वर्णित है

- भारतीय रिज़र्व बैंक यह सुनिश्चित करता है कि बैंक न केवल लाभकारी व्यवसायों और व्यापारियों के लिए ऋण प्रदान करते हैं, बल्कि छोटे किसानों, लघु उद्योगों, छोटे उधारकर्ताओं आदि के लिए भी ऋण देते हैं।
- समय-समय पर बैंकों को भारतीय रिज़र्व बैंक को यह रिपोर्ट देनी होगी कि वे कितना ऋण और किस ब्याज दर पर उधारकर्ताओं (Borrowers) को उधार दे रहे हैं।
- बैंक जो जमा प्राप्त करता है, उसमें से न्यूनतम नकद शेष (Minimum Cash Balance) को बनाए रखता है। भारतीय रिज़र्व बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए रखने में बैंकों की निगरानी (Monitor) करता है।

अनौपचारिक क्षेत्र में ऋण की विशेषताएँ

- यह क्षेत्र अपने ऋणों पर उच्च ब्याज दरें लगाता है, क्योंकि इस क्षेत्र की निगरानी के लिए कोई संगठन (Organisation) नहीं है और इन अनौपचारिक क्षेत्रों (Informal Sectors) से ऋण प्राप्त करने के लिए समर्थक ऋणाधार सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है।
- यह उधारकर्ताओं के ऋण को बढ़ा सकता है और उन्हें कर्ज के जाल में फँसा सकता है अर्थात् इससे उन पर ऋण का बोझ अधिक हो सकता है।
- इसके अतिरिक्त जो लोग अनौपचारिक क्षेत्र से उधार लेकर उद्यम शुरू करना चाहते हैं, वे उधार की ब्याज दर ऊँची होने के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं। हालाँकि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी गरीब परिवार अपनी उधार की जरूरतों के लिए औपचारिक और अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर हैं, क्योंकि यहाँ उन्हें किसी भी प्रकार के समर्थक ऋणाधार की आवश्यकता नहीं होती है।

निर्धनों के लिए स्वयं सहायता समूह

अनौपचारिक स्रोतों की अपेक्षा बैंक से ऋण प्राप्त करना बहुत कठिन है। समर्थक ऋणाधार सुरक्षा और आवश्यक दस्तावेजों का न होना गरीबों को बैंक से ऋण प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करता है। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups, SHGs) आमतौर पर ऐसे लोगों का समूह होता है, जो समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि (Economic Background) वाले होते हैं। वे एकत्रित होकर अपनी क्षमता के अनुसार नियमित रूप से पैसे बचाते हैं।

स्वयं सहायता समूह में एक-दूसरे के पड़ोसी 15-20 सदस्य होते हैं। सदस्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए छोटे कर्ज समूह (Small Loan Group) से ही कर्ज ले सकते हैं। समूह इन कर्जों पर ब्याज लेता है, लेकिन यह साहूकार (Moneylenders) द्वारा लिए जाने वाले ब्याज से कम होता है। एक या दो वर्षों के बाद यदि समूह नियमित रूप से बचत में है, तो वह बैंक से ऋण प्राप्त करने के योग्य हो जाता है।

ऋण समूह के नाम पर दिए जाते हैं और इसका उद्देश्य सदस्यों के लिए स्वरोजगार के अवसर (Opportunities) का सृजन करना है। उदाहरण के लिए, सदस्यों को छोटे-छोटे कर्ज अपनी गिरवी जमीन छुड़वाने व घर बनाने के लिए तथा सिलाई की मशीन, हथकरघा, पशु इत्यादि संपत्ति खरीदने के लिए दिए जाते हैं।

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्र के गरीबों को संगठित करने में मदद करते हैं। इससे न केवल महिलाएँ स्वावलंबी हो जाती हैं, बल्कि समूह की बैठकों में विभिन्न सामाजिक विषयों; जैसे—स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा आदि के संबंध में जानकारी भी प्राप्त होती है।

ग्रामीण बैंक ऑफ बांग्लादेश

'ग्रामीण बैंक ऑफ बांग्लादेश' गरीबों को उचित दरों पर ऋण देने की सुविधा प्रदान करने वाला एक सफलतम बैंक है। **प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस**, ग्रामीण बैंक के संस्थापक और शांति के लिए वर्ष 2006 के नोबेल पुरस्कार के प्राप्तकर्ता ने 1970 के दशक में एक छोटी परियोजना के रूप में इसे शुरू किया।

उन्होंने इस सिद्धांत पर काम किया कि अगर उचित शर्तों पर ऋणदाताओं को ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है, तो विभिन्न व्यवसाय वाले लाखों लोग राष्ट्र को विकसित कर सकते हैं।

चैप्टर प्रैक्टिस

भाग 1
वस्तुनिष्ठ प्रश्न

• बहुविकल्पीय प्रश्न

1. आपसी सहमति के आधार पर वस्तुओं का प्रत्यक्ष रूप से आदान-प्रदान किसके अंतर्गत किया जाता है?

(a) वस्तु प्रणाली (b) विनिमय प्रणाली
(c) वस्तु विनिमय प्रणाली (d) गैर-मुद्रा प्रणाली

उत्तर (c) आपसी सहमति के आधार पर वस्तुओं का प्रत्यक्ष रूप से आदान-प्रदान वस्तु विनिमय प्रणाली के अंतर्गत किया गया है। इसे आवश्यकता के दोहरे संयोग के रूप में भी जाना जाता है।

2. भारत सरकार की ओर से कौन-सी संस्था करेंसी नोटों को जारी करती है?

(a) भारतीय स्टेट बैंक (b) भारतीय रिजर्व बैंक
(c) सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया (d) वित्त मंत्रालय

उत्तर (b) भारत सरकार की ओर से भारतीय रिजर्व बैंक करेंसी नोट को जारी करता है। भारतीय नोटों पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

3. समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका स्वामित्व .... होता है।

(a) ऋण लेने वाला
(b) ऋण देने वाला
(c) मध्यता रखने वाला
(d) ऋण लेने तथा देने वाले दोनों

उत्तर (a) समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका स्वामित्व ऋण लेने वाला होता है। समर्थक ऋणाधार का इस्तेमाल उधारदाता को गारंटी देने के लिए किया जाता है।

4. भारत में निम्नलिखित में से कौन अनौपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?

(a) व्यापारी (b) साहूकार
(c) सहकारी समितियाँ (d) बड़े किसान

उत्तर (c) भारत में सहकारी समितियाँ अनौपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आती हैं। अनौपचारिक क्षेत्र वह क्षेत्र है, जिन पर सरकारी नियंत्रण नहीं होता है। अनौपचारिक क्षेत्रों के अंतर्गत व्यापारी, साहूकार तथा बड़े किसान आते हैं।

5. दी गई सूची में से गलत युग्म का चयन करें

(a) साहूकार – ब्याज की उच्च दर
(b) व्यापारी – ब्याज की मध्यम दर
(c) बैंक – ब्याज की निम्न दर
(d) सहकारी समितियाँ – ब्याज की उच्च दर

उत्तर (d) सहकारी समितियों द्वारा दिए गए ऋण पर ब्याज की दर अधिक नहीं होती है, क्योंकि इस पर सरकारी नियंत्रण होता है।

6. दिए गए कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें

- यहाँ किसानों को कम ब्याज दर पर ऋण दिया जाता है।
- यहाँ किसानों को अपने उत्पादों को उगाने से पूर्व समझौता किया जाता है।
- यहाँ किसानों को ऋण देने वाला लाभ भी कमा सकता है और हानि भी।

(a) साहूकारों से ऋण (b) व्यापारियों से ऋण
(c) नियोक्ता से ऋण (d) सहकारी समितियों से ऋण

उत्तर (b) व्यापारियों से ऋण

7. वाणिज्यिक बैंक ऋण से संबंधित अपनी रिपोर्ट किसको सौंपता है?

(a) भारत सरकार (b) भारतीय रिजर्व बैंक
(c) वित्त मंत्रालय (d) नाबार्ड बैंक

उत्तर (b) वाणिज्यिक बैंक ऋण से संबंधित अपनी रिपोर्ट भारतीय रिजर्व बैंक को सौंपता है, जिसमें ऋण की मात्रा तथा दिशा के बारे में बताया गया होता है।

8. स्वयं सहायता समूह में .... व्यक्तियों का समूह आपस में जुड़ा होता है, जो नियमित रूप से पैसे का संचय करते हैं।

(a) 10-12 (b) 15-20
(c) 50-100 (d) 150-200

उत्तर (b) स्वयं सहायता समूह में 15-20 व्यक्ति आपस में जुड़े होते हैं, जो नियमित रूप से धन का संचय करते हैं, जिसका उपयोग वह अपने सदस्यों के मध्य ऋण आवंटन में करते हैं।

9. बांग्लादेश ग्रामीण बैंक के जन्मदाता प्रो. मोहम्मद यूनुस को किस वर्ष नोबेल शांति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया?

(a) वर्ष 2004 (b) वर्ष 2005
(c) वर्ष 2006 (d) वर्ष 2008

उत्तर (c) बांग्लादेश ग्रामीण बैंक के जन्मदाता प्रो. मोहम्मद यूनुस को वर्ष 2006 में नोबेल शांति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था। ग्रामीण बैंक ऑफ बांग्लादेश गरीबों को उचित दरों पर ऋण देने की सुविधा प्रदान करने वाला एक सफलतम बैंक है।

10. दिए गए कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें

- इसका गठन समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है।
- इनके द्वारा दिया गया ऋण साहूकार द्वारा दिए गए ऋण से कम दर पर दिया जाता है।
- यह व्यक्तियों में स्वावलंबन की भावना को जाग्रत करती है।

(a) औपचारिक क्षेत्र (b) अनौपचारिक क्षेत्र
(c) स्वयं सहायता समूह (d) सहकारी संस्थान

उत्तर (c) स्वयं सहायता समूह

11. सुमेलित करें

सूची I	सूची II
A. मुद्रा के स्वरूप	1. आर.बी. आई
B. करेंसी नोट जारीकर्ता	2. चेक
C. माँग जमा	3. कागजी मुद्रा और सिक्के
D. नकदी के प्रयोग के बिना भुगतान	4. बैंकों में निक्षेप

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	2	1	4	(b)	2	1	3	4
(c)	3	1	4	2	(d)	4	3	2	1

उत्तर (c) 3 1 4 2

12. निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

1. मुद्रा के आधुनिक स्वरूप में कागजी मुद्रा और सिक्के शामिल हैं।
2. मुद्रा का संचालन भारत सरकार की संस्थाओं द्वारा किया जाता है।
3. आधुनिक समय में मुद्रा का उपयोग केवल विनिमय के अंतर्गत किया जाता है।

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर (d) 1, 2 और 3

13. दिए गए कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें

1. साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार एकसमान होती हैं।
2. साख की दो विभिन्न स्थितियाँ हैं।
3. साख के अंतर्गत कर्जदार ऋण देने से पहले भुगतान करने का वादा करता है।

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर (b) साख की दो विभिन्न स्थितियाँ हैं। एक स्थिति में ऋण सकारात्मक तथा दूसरी स्थिति में नकारात्मक भूमिका निभाता है। साख के अंतर्गत कर्जदार ऋण देने से पहले भुगतान करने का वादा करता है। साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

कथन-कारण प्रश्न

निर्देश (प्र. सं. 14-18) नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है। दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें

कूट

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

14. कथन (A) मुद्रा के आधुनिक रूपों में करेंसी-कागज के नोट और सिक्के शामिल हैं।
कारण (R) बेचने पर सहमति हो, तो इसे आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है।

उत्तर (b) कागज के नोट एवं सिक्के आधुनिक मुद्रा की करेंसी के रूप में शामिल किए जाते हैं। मुद्रा को सरकार द्वारा जारी किया जाता है और अर्थव्यवस्था के अंदर परिचालित किया जाता है, परंतु बेचने पर सहमति हो, तो आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है। इस स्थिति में एक पक्ष दूसरे पक्ष की वस्तु खरीदकर व बेचकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। अतः A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

15. कथन (A) भारत में बैंक जमा का केवल कुछ नकद ही अपने पास रखता है।
कारण (R) ऐसा प्रावधान जमाकर्ताओं द्वारा किसी एक दिन धन निकालने की संभावना को देखते हुए किया गया है।

उत्तर (a) भारत में बैंक जमा का केवल 15% भाग ही अपने पास रखता है। ऐसा प्रावधान जमाकर्ताओं द्वारा किसी एक दिन धन निकालने की संभावना को देखते हुए किया गया है। बैंक जमा राशि स्वीकार करता है तथा इस पर ब्याज भी देता है। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

16. कथन (A) साख की शर्तों में समर्थक ऋणाधार तथा आवश्यक दस्तावेजों को शामिल किया जाता है।
कारण (R) इसको शामिल करने का मुख्य उद्देश्य साख को सुरक्षित रखना है।

उत्तर (a) साख की शर्तों में समर्थक ऋणाधार तथा आवश्यक दस्तावेजों (भूमि, इमारत, गाड़ी, पशु, बैंक) को शामिल किया जाता है। इसको शामिल करने का मुख्य उद्देश्य साख को विपरीत परिस्थितियों में सुरक्षित रखना है। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियों में ऐसे बहुत से लेन-देन होते हैं, जहाँ किसी-न-किसी रूप में ऋण या साख का प्रयोग होता है अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

17. कथन (A) औपचारिक क्षेत्र व्यक्तियों को कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते हैं।
कारण (R) यह क्षेत्र मुख्यतः भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा पर्यवेक्षित होता है।

उत्तर (a) औपचारिक क्षेत्र व्यक्तियों को कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते हैं, क्योंकि यह क्षेत्र भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा पर्यवेक्षित होता है। इसमें बैंक एवं सहकारी समितियाँ शामिल होती हैं तथा ब्याज का निर्धारण सरकार की नीतियों के आधार पर किया जाता है, जो अपेक्षाकृत कम होता है। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है

18. कथन (A) **स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों के साहूकारों को संगठित करने में सहायता करता है।**

कारण (R) **इसके कारण गाँवों के विभिन्न समूह स्वावलंबी बनते हैं।**

उत्तर (d) स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन व्यक्तियों को संगठित करने में सहायता करता है, जिसमें धन के सामूहिक प्रयोग से निर्धन वर्गों के बीच स्वावलंबन की भावना जाग्रत होती है तथा ग्रामीण क्षेत्र के गरीबों को संगठित करने में मदद भी करती है। अतः A गलत है, किंतु R सही है।

केस स्टडी आधारित प्रश्न

निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

अनौपचारिक क्षेत्रक में ऋणदाताओं की गतिविधियों की देखरेख करने वाली कोई संस्था नहीं है। वे ऐच्छिक दरों पर ऋण दे सकते हैं। उन्हें नाजायज़ तरीकों से अपने पैसे वापस लेने से रोकने वाला कोई नहीं है। औपचारिक ऋणदाताओं की तुलना में अनौपचारिक क्षेत्रक के ज्यादातर ऋणदाता कहीं अधिक ब्याज वसूल करते हैं, इसलिए अनौपचारिक ऋण कर्ज़दाता को अधिक महँगा पड़ता है।

ऋण की ऊँची लागत का अर्थ है—कर्ज़दार की आय का अधिकतर हिस्सा ऋण की अदायगी में ही खर्च हो जाता है। इसलिए कर्ज़दारों के पास अपने लिए कम आय बचती है। कुछ मामलों में ऋण की ऊँची ब्याज दरों के कारण कर्ज़ वापस करने की रकम कर्ज़दार की आय से भी अधिक हो जाती है। इसके कारण ऋण का बोझ बढ़ जाता है और व्यक्ति ऋण-जाल में फँस जाता है। ऐसा भी संभव है कि जो लोग कर्ज लेकर अपना उद्यम शुरू करना चाहते हैं, वे ऋण की अधिक लागत को देखकर पीछे हट जाएँ।

इन सभी कारणों को देखते हुए बैंकों और सहकारी समितियों को ज़्यादा कर्ज़ देना चाहिए। इसके जरिए लोगों की आय बढ़ सकती है और बहुत से लोग अपनी विभिन्न ज़रूरतों के लिए सस्ता कर्ज़ ले सकेंगे। वे फसल उगा सकते हैं, कोई कारोबार कर सकते हैं, छोटे उद्योग इत्यादि लगा सकते हैं या वस्तुओं का व्यापार कर सकते हैं। सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज़ देश के विकास के लिए अति आवश्यक है।

(i) **आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ………… ऋणदाताओं का प्रचलन अधिक है।**

(a) औपचारिक (b) सहकारी संघों
(c) अनौपचारिक (d) वित्त मंत्रालय

उत्तर (c) अनौपचारिक

(ii) **भारतीय किसानों को किस कारण अनौपचारिक ऋणदाताओं के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है?**

(a) ग्रामीण किसान की अनभिज्ञता
(b) आसानी से ऋण उपलब्ध हो जाना
(c) किसानों को तत्काल पैसे की आवश्यकता
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (d) उपरोक्त सभी

(iii) **आर्थिक संपन्नता के बावजूद भारतीय किसान किन परिस्थितियों में ऋण-जाल के चंगुल में फँस जाते हैं?**

(a) भारतीय किसान ऊँची ब्याज दर पर औपचारिक ऋणदाताओं से ऋण लेते हैं
(b) भारतीय किसान ऊँची ब्याज दर पर अनौपचारिक ऋणदाताओं से ऋण लेते हैं
(c) भारतीय किसान नाबार्ड से ऋण प्राप्त करते हैं
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (b) आर्थिक संपन्नता के बावजूद भी भारतीय किसान अनौपचारिक क्षेत्र के अत्यधिक ऋण-जाल में फँस जाते हैं, जो इन्हें निर्धनता की ओर ले जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर ऋण की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें काफी खर्चे होते हैं। इस कारण किसान साहूकारों, व्यापारियों व बैंकों से ऋण लेते हैं, परंतु समय से ऋण न चुका पाने के कारण उन्हें नुकसान भी उठाना पड़ता है।

(iv) **किसानों की आर्थिक उन्नति के लिए कौन-सा कदम सबसे अधिक प्रभावी हो सकता है?**

(a) कृषि के साथ-साथ किसान कुटीर उद्योग में संलग्न हों
(b) किसानों को सहकारी संघों द्वारा कृषि कार्य के लिए कर्ज़ मिले
(c) किसानों को अनौपचारिक ऋणदाताओं से मुक्त करवाया जाए
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (d) उपरोक्त सभी

(v) **देश के विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में किस प्रकार के कर्ज की अति आवश्यकता है?**

(a) महँगा परंतु सामर्थ्य के अनुकूल
(b) सस्ता परंतु सामर्थ्य के प्रतिकूल
(c) सस्ता परंतु सामर्थ्य के अनुकूल
(d) महँगा परंतु सामर्थ्य के प्रतिकूल

उत्तर (c) देश के विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सस्ता तथा सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज की अति आवश्यकता है। इस धन का प्रयोग कर निर्धन अपने सामाजिक तथा आर्थिक स्तर को ऊपर उठा सकता है, जो समाज के लिए एक सकारात्मक पहलू है।

(vi) **दिए गए कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें**

1. शहरी क्षेत्रों के निर्धनों के कर्ज का 85% हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र से पूरा किया जाता है।
2. शहरी क्षेत्रों के अमीरों के कर्ज का 90% हिस्सा औपचारिक क्षेत्र से पूरा किया जाता है।
3. औपचारिक क्षेत्र रिज़र्व बैंक के नियमानुसार ब्याज का निर्धारण करते हैं।

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर (d) 1, 2 और 3

भाग 2

वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? इसकी कुछ सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर वस्तुओं के बदले वस्तुओं के आदान-प्रदान की प्रणाली को वस्तु विनिमय प्रणाली कहते हैं। वस्तु विनिमय प्रणाली में लेन-देन का माध्यम मुद्रा पर केंद्रित न होकर वस्तुओं पर केंद्रित होता है।
विनिमय प्रणाली की कुछ सीमाएँ निम्नलिखित हैं
(i) दोनों पक्ष एक-दूसरे से वस्तुएँ खरीदने और बेचने पर सहमति रखते हैं।
(ii) वस्तुओं का मूल्य निर्धारण करना अति कठिन है।
(iii) इसमें बहुत अधिक समय लगता है।
(iv) अत्यधिक वस्तुओं को विभाजित नहीं किया जा सकता।

2. मुद्रा के आधुनिक रूप को स्पष्ट कीजिए। मुद्रा की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर मुद्रा के आधुनिक स्वरूप में कागजी मुद्रा और सिक्के शामिल हैं। सिक्कों की शुरुआत से पहले अनाज और पशुओं जैसी विभिन्न वस्तुओं को धन के रूप में प्रयोग किया जाता था। उसके बाद सोने, चाँदी, ताँबे आदि धातु के सिक्कों का प्रयोग शुरू हुआ।

मुद्रा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं
- यह सामान्यतः धन के रूप में स्वीकार की जाती है, जिसमें सिक्के और कागज के नोट शामिल हैं।
- इसे सरकार द्वारा जारी किया जाता है और एक अर्थव्यवस्था के अंदर परिचालित किया जाता है।
- आधुनिक मुद्रा का विनिमय के अतिरिक्त कोई और अन्य उपयोग नहीं है।
- विनिमय के माध्यम के रूप में रुपये को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

3. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस प्रकार सुलझाती है? अपनी ओर से उदाहरण देकर समझाइए। (NCERT)

उत्तर यदि किसी व्यक्ति के पास मुद्रा है, तो वह इसका विनिमय किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए आसानी से कर सकता है। आवश्यकताओं का दोहरा संयोग विनिमय प्रणाली की एक अनिवार्य विशेषता है, जहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है। इसकी तुलना में ऐसी अर्थव्यवस्था, जहाँ मुद्रा का प्रयोग होता है, मुद्रा महत्त्वपूर्ण मध्यवर्ती भूमिका प्रदान करके आवश्यकताओं के दोहरे संयोग को खत्म कर देती है।

उदाहरण के लिए, आप वस्तु विनिमय प्रणाली के आधार पर अपनी पुरानी किताबों को बेचकर उसके बदले एक गिटार लेना चाहते हैं, तो इस स्थिति में आपको ऐसे व्यक्ति को तलाशना होगा जो अपने गिटार के बदले पुरानी किताबें लेने को तैयार हो। ऐसे व्यक्ति को ढूँढ पाना बहुत मुश्किल हो जाता है, लेकिन यदि वह छात्र अपनी किताबों को बेचकर धन अर्जित कर लेता है, तो वह उस धन से गिटार खरीद सकता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को सुलझाती है।

4. बैंकों में निक्षेप (जमा) की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बैंकों में निक्षेप (जमा) की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं
- मुद्रा को एकत्रित या जमा करने का यह अन्य रूप है।
- लोग अपने नाम पर एक बैंक खाता खोलकर बैंकों में अपना अतिरिक्त पैसा जमा करते हैं।
- बैंक जमा राशि स्वीकार करते हैं और इस पर ब्याज भी देते हैं।
- बैंक में जमा किए गए धन को जमाकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार निकाल सकते हैं।
- बैंकों के साथ जमा राशि को माँग जमा कहते हैं।

5. अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों और जरूरतमंद लोगों के बीच बैंक किस प्रकार मध्यस्थता करते हैं? (NCERT)

उत्तर बैंक विभिन्न लोगों के पैसे अपने यहाँ जमा रखता है। जिन लोगों के पास अतिरिक्त मुद्रा होती है, वे बैंक में अच्छी धनराशि जमा करके रखते हैं। बैंक उन्हें उन पैसों पर ब्याज भी देता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें ऋण की आवश्यकता होती है और वे ऋण के लिए बैंक जाते हैं। बैंक अपने पास जमा धनराशि से इन जरूरतमंद लोगों को ऋण उपलब्ध कराता है।

इस तरह, बैंक अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों और जरूरतमंद लोगों के बीच मध्यस्थता का काम करता है।

6. बैंकों और सहकारी समितियों को अपनी ऋण देने की गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ाने के किन्हीं तीन कारणों की व्याख्या कीजिए। (CBSE 2019)

अथवा **बैंकों और सहकारी समितियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण देने की सुविधाएँ बढ़ाना क्यों आवश्यक है? (CBSE 2019)**

उत्तर बैंकों और सहकारी समितियों को अपनी ऋण देने की गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ाने के कुछ निम्न कारण हैं
- अनौपचारिक क्षेत्र (जैसे—जमींदार, साहूकार तथा व्यापारी) ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च ब्याज दर पर ऋण देते हैं, इसलिए उधारकर्ता के लिए लागत बहुत अधिक होती है।
- अधिक मात्रा में उधार लेने पर आय का बड़ा हिस्सा निवेश करने के बजाय ऋण चुकाने में चला जाता है।

इस प्रकार, यह आवश्यक है कि बैंक और सहकारी समितियाँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अपने ऋण में वृद्धि करें, ताकि ऋण के अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भरता कम हो जाए।

7. ऋण सकारात्मक भूमिका कैसे निभाते हैं? उदाहरण सहित कथन की पुष्टि कीजिए। (CBSE 2019)

अथवा **"बैंक लोन हमेशा लोगों की अर्जन क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं।" उचित उदाहरण के द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए। (CBSE 2019)**

उत्तर ऋण सकारात्मक भूमिका निम्न प्रकार निभाते हैं
- ऋण जीवन के सभी क्षेत्रों में लोगों को अपना व्यवसाय स्थापित करने, अपनी आय बढ़ाने और अपने परिवारों का समर्थन करने में मदद करता है।
- ऋण के द्वारा लोग कच्चे माल को खरीदकर उनसे वस्तुएँ तैयार कर अपनी आय क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं।
- ऋण की सहायता से लोग कौशल विकास की स्थापना कर सकते हैं, जो बाद में उनकी आय बढ़ाने में मदद कर सकता है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण कृषि उत्पादन एवं विकास में सहायक होते हैं। उदाहरण, कृषि के विकास हेतु किसान औपचारिक या अनौपचारिक क्षेत्रों से ऋण लेकर उत्पादक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं।

इस प्रकार, उपरोक्त बिंदु यह पुष्टि करते हैं कि ''बैंक लोन हमेशा लोगों की अर्जन क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं।''

8. साख की प्रथम स्थिति : ऋण एक महत्त्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाता है, पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर साख की प्रथम स्थिति में उत्पादन खर्च को पूरा करने के लिए ऋण का उपयोग किया जाता है, जब उत्पादन पूरा हो जाता है, तो यह आय को बढ़ाता है। इस स्थिति में ऋण एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, सलीम (एक निर्माता) अपने व्यवसाय के लिए ऋण लेता है। त्योहार के मौसम के समय वह व्यापारियों से बड़े ऑर्डर प्राप्त करता है। समय पर उत्पादन पूरा करने के लिए वह कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता से ऋण पर सामग्री की आपूर्ति करने के लिए कहता है। वह व्यवसाय में उपयोग आने वाले अन्य सामानों के लिए अग्रिम भुगतान के रूप में व्यापारी से नकद ऋण भी प्राप्त करता है। निर्माण चक्र के अंत में, सलीम ऑर्डर देने में सफल होता है। वह अच्छा लाभ कमाता है और उस धन का भुगतान करता है, जो उसने ऋण के रूप में लिया था। यह आय में वृद्धि करने में सहायता करता है।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि ऋण एक महत्त्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाता है।

9. साख व्यवस्था की विविधता के कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर साख व्यवस्था की विविधता के तीन कारण निम्न हैं

(i) **साहूकारों से ऋण** छोटे किसान गाँव के साहूकारों से ब्याज की उच्च दर पर पैसे उधार लेते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण वे कर्ज-जाल में फँस जाते हैं।

(ii) **व्यापारियों से ऋण** किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि व्यापारियों से ऋण मिलता है। व्यापारियों को भी किसानों से उनकी फसल को बेचने का वादा मिलता है। इस तरीके से व्यापारी सुनिश्चित करता है कि धन लाभ कमाने के अतिरिक्त अदा भी किया जाता है। वह कम कीमत पर किसानों से फसल खरीदता है और जब कीमतें उच्च होती हैं, तो उसे बेचता है।

(iii) **बैंकों से ऋण** मध्यम और बड़े किसान बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। बैंक ऐसे उधारकर्ताओं को अन्य सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।

10. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए। **(CBSE 2020)**

उत्तर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका निम्न प्रकार है

- स्वयं सहायता समूह ने गरीबों और महिलाओं में संगठन शक्ति और बचत पूँजी को बढ़ावा दिया है।
- महिलाओं का आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना तथा सामाजिक विषयों (स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा) पर चर्चा करना।
- गरीबों और वंचित वर्ग में आत्मनिर्भरता का विकास करना।
- स्वयं सहायता समूह के द्वारा कम ब्याज पर ऋण की उपलब्धता, जिसके कारण छोटे-छोटे कार्यों का संपादन संभव हो सका।

11. हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की आवश्यकता क्यों है? **(NCERT)**

उत्तर भारत में औपचारिक स्रोतों की तुलना में अनौपचारिक स्रोतों से अधिक ऋण लिया जाता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जिनकी पहुँच औपचारिक स्रोतों तक नहीं है। ऐसे लोग साहूकारों के चक्कर में फँस जाते हैं, जो गरीबों से उच्च दर पर ब्याज लेते हैं। ऐसे लोगों को गरीबी के कुचक्र से निकालने के लिए उन तक ऋण के औपचारिक स्रोतों को पहुँचाना आवश्यक होता है।

इससे गाँवों और दूर-दराज के इलाकों में बसे ग्रामीणों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त बैंकों को अपने ऋण के आधारभूत ढाँचे में कुछ मूलभूत परिवर्तन की ओर ध्यान देना होगा, जिससे अधिक-से-अधिक लोगों की पहुँच बैंकों तक बन पाए।

12. गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठनों के पीछे मूल विचार क्या हैं? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए। **(NCERT)**

अथवा **ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका स्पष्ट करें।** **(CBSE 2020)**

उत्तर स्वयं सहायता समूहों का गठन ऐसे गरीबों के लिए किया जाता है, जिनकी पहुँच ऋण के औपचारिक स्रोतों तक नहीं है। इनके द्वारा लिए गए ऋण की राशि इतनी कम होती है कि ऋण देने में आने वाले खर्चे की वसूली भी नहीं हो पाती। अशिक्षा और जागरूकता के अभाव से उनकी समस्या और बढ़ जाती है। स्वयं सहायता समूह ऐसे लोगों को छोटा ऋण देते हैं ताकि उनकी आजीविका चलती रहे। इसके अतिरिक्त स्वयं सहायता समूह ऐसे लोगों में ऋण अदायगी का विचार भी विकसित करता है।

13. अनौपचारिक ऋण के स्रोतों का कर्जदारों पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2019)**

उत्तर अनौपचारिक ऋण के स्रोतों द्वारा कर्जदारों पर निम्न बुरे प्रभाव पड़ते हैं

- अनौपचारिक क्षेत्र में ऋणदाताओं की गतिविधियों को नियंत्रित करने वाली कोई संस्था या संगठन नहीं है। इसलिए वे ऐच्छिक दरों पर ऋण देते हैं, जिससे कर्जदारों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
- औपचारिक ऋणदाताओं की तुलना में अनौपचारिक क्षेत्रक के ऋणदाता कहीं अधिक ब्याज वसूलते हैं इसलिए अनौपचारिक ऋण कर्जदाता को अधिक महँगा लगता है।
- कर्जदार की आय का अधिकतर हिस्सा ऋण की अदायगी में ही खर्च हो जाता है। इसलिए कर्जदारों के पास अपने लिए कम आय बचती है।
- कुछ मामलों में ऋण की ऊँची ब्याज दरों के कारण कर्ज वापस करने की रकम कर्जदार की आय से भी अधिक हो जाती है। इसके कारण ऋण का बोझ बढ़ जाता है।

14. ''साख कभी-कभी नकारात्मक भूमिका भी अदा करती है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए। **(CBSE 2019, 16)**

अथवा **ऋण कभी-कभी उधारकर्ता को एक स्थिति में धकेल देता है, जिससे पुनर्भुगतान बहुत कठिन होता है। उदाहरण के साथ इस कथन की पुष्टि करें।** **(CBSE 2020)**

उत्तर ग्रामीण क्षेत्र में किसानों द्वारा फसल उत्पादन हेतु ऋण लिया जाता है और यह आशा की जाती है कि फसल अच्छी होने पर वह ऋण

चुका देगा, किंतु सूखा, अतिवृष्टि या अन्य किसी महामारी के कारण फसल खराब हो जाने पर वह ऋण चुकाने में असमर्थ होता है। अतः उसे पुनः ऋण लेने की आवश्यकता पड़ती है, किंतु अगली बार भी फसलोत्पादन सामान्य रहने पर वह पुनः ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाता है। इस प्रकार, उस पर ऋणों का बोझ लगातार बढ़ता है, जिसे ऋण-जाल कहा जाता है।

ऋण-जाल के लगातार बढ़ते रहने से किसान को अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचकर ऋण चुकाना पड़ता है। अतः जोखिमपूर्ण स्थिति में ऋण लेना उसके लिए अत्यंत घातक हो जाता है, जो उसकी स्थिति में सुधार के बजाय गिरावट लाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में इसके अधिक अनियंत्रित होने के कारण हैं—ब्याज दर का अधिक होना तथा साहूकार एवं महाजनी व्यवस्था। ये दोनों कारण किसानों की स्थिति में ह्रास पैदा करते हैं।

इस प्रकार, साख कभी-कभी नकारात्मक भूमिका भी अदा करती है। साथ ही यह कभी-कभी उधारकर्ता को एक स्थिति में धकेल देती है, जिससे पुनर्भुगतान कठिन होता है।

• दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मुद्रा के आधुनिक रूप कौन-से होते हैं? उन सभी रूपों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर मुद्रा के आधुनिक रूप निम्नलिखित हैं

(i) **करेंसी** मुद्रा के आधुनिक रूपों में करेंसी-कागज के नोट और सिक्के शामिल हैं। धीरे-धीरे कागज के नोटों ने प्राचीन सिक्कों की जगह ले ली। ये और बात है कि कम मूल्य वाले सिक्के अभी भी प्रयोग किए जा रहे हैं। सिक्कों और नोटों को सरकार द्वारा अधिकृत एजेंसी जारी करती है। भारत में इन नोटों को 'रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया' के द्वारा जारी किया जाता है।

भारत के करेंसी नोट पर आपको एक वाक्य लिखा हुआ मिलेगा, जो उस करेंसी नोट के धारक को उस नोट पर लिखी राशि देने का वादा करता है।

(ii) **बैंकों में निक्षेप या जमा** अपनी रोज-रोज की जरूरतों के लिए अधिकांश लोगों को बहुत ही कम करेंसी की आवश्यकता होती है। शेष बची राशि को लोग सामान्यतया बैंकों में निक्षेप या जमा के रूप में रखते हैं। बैंक में रखा हुआ रुपया सुरक्षित रहता है और उस पर ब्याज भी मिलता है। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने खाते से रुपये निकाल सकते हैं, चूँकि बैंक खातों में जमा धन को माँग के रूप में निकाला जा सकता है, इसलिए इस जमा को 'माँग जमा' कहा जाता है।

(iii) **चेक द्वारा भुगतान** बकाया राशि के भुगतान हेतु चेक का प्रयोग किया जाता है। चेक पर भुगतान पाने वाले व्यक्ति या संस्था का नाम और भुगतान की जाने वाली राशि लिखी होती है। चेक जारी करने वाले व्यक्ति को चेक के नीचे हस्ताक्षर करने होते हैं। इसके अतिरिक्त भुगतान हेतु डिमांड ड्राफ्ट भी प्रयोग में लाया जाता है। दिखने में यह चेक की तरह ही होता है, लेकिन इस पर बैंक के अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं।

2. भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यों का उल्लेख कीजिए। (CBSE 2019)

अथवा **भारतीय रिजर्व बैंक के महत्त्व का उल्लेख कीजिए। (CBSE 2020)**

उत्तर देश के केंद्रीय बैंक 'भारतीय रिजर्व बैंक' की स्थापना रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट, 1934 के तहत 1 अप्रैल, 1935 को की गई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जनवरी, 1949 में इसका राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इसके बाद यह बैंक भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व में आ गया। इस बैंक का प्रधान कार्यालय मुंबई (महाराष्ट्र) में स्थित है। भारतीय रिजर्व बैंक के प्रमुख/महत्त्वपूर्ण कार्य निम्न हैं

- भारतीय रिज़र्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है।
- भारतीय रिजर्व बैंक इस बात पर दृष्टि रखता है कि बैंक वास्तव में अपने पास नकद शेष बनाए हुए है कि नहीं। बैंक अपनी कुल जमा का 15% हिस्सा नकद के रूप में रखते हैं।
- भारतीय रिजर्व बैंक इस बात का ध्यान रखता है कि बैंक केवल लाभ अर्जित करने वाले व्यवसायियों एवं व्यापारियों को ही ऋण तो नहीं दे रहे हैं, बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण दे रहे हैं।
- समय-समय पर बैंकों द्वारा आरबीआई को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे किनको और कितना ऋण दे रहे हैं और उनकी ब्याज दरें क्या हैं?
- भारतीय रिजर्व बैंक आवश्यकता पड़ने पर बैंकों को ब्याज पर नकदी उपलब्ध कराता है।

3. भारत की अर्थव्यवस्था में बैंक कैसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं? स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2019)

अथवा **बैंक देश के आर्थिक विकास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं? कथन को उदाहरण सहित समझाइए। (CBSE 2019)**

उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था में बैंकों की निम्न भूमिका है

जमा राशि बैंक जमा राशि को स्वीकार करते हैं और जमा पर ब्याज के रूप में एक निश्चित राशि का भुगतान भी करते हैं। इस प्रकार, लोगों का पैसा बैंकों के पास सुरक्षित है और यह ब्याज के रूप में एक राशि कमाता है। लोगों को आवश्यकता पड़ने पर धन वापस लेने का भी प्रावधान है। चूँकि बैंक खातों में जमा राशि को माँग पर वापस लिया जा सकता है, इसलिए इन जमाओं को माँग जमा भी कहा जाता है।

ऋण बैंक अपनी जमा राशि का केवल एक छोटा हिस्सा अपने पास नकदी के रूप में रखते हैं। बैंक ऋण का विस्तार करने के लिए जमा के प्रमुख हिस्से का उपयोग करते हैं। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण की भारी माँग है। बैंक लोगों की ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जमा का उपयोग करते हैं।

इसके अतिरिक्त बैंक हमें उद्योगों की स्थापना तथा कृषि के विकास के लिए साख उपलब्ध कराते हैं। जो रोजगार पैदा करने और हमारी आय में वृद्धि के द्वारा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। बैंक द्वारा दिए गए ऋण से किसानों को बड़े स्तर पर मदद मिलती है, जो कृषि उत्पादन के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में मददगार साबित होता है।

4. "भारतीय रिज़र्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है।" इस कथन की उदाहरणों सहित पुष्टि कीजिए। (CBSE 2020)

अथवा **भारतीय रिज़र्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों है?**

उत्तर बैंकों की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करके रिज़र्व बैंक न केवल बैंकिंग और फाइनेंस को सही दिशा में ले जाता है, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था को भी सुचारु रूप से चलाने में मदद करता है।

इसके अतिरिक्त भारतीय रिज़र्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है, जो निम्नलिखित हैं

- भारतीय रिजर्व बैंक ध्यान रखता है कि बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए हुए है कि नहीं।
- भारतीय रिज़र्व बैंक इस बात पर भी नजर रखता है कि बैंक केवल लाभ अर्जित करने वाले व्यवसायियों और व्यापारियों को ही ऋण उपलब्ध तो नहीं करा रहे, बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण का लाभ मिल रहा है या नहीं।
- समय-समय पर, बैंकों द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना और किनको ऋण दे रहे हैं और ब्याज की दरें क्या हैं।

यह पर्यवेक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि छोटे व्यवसाय भी विकसित हों। इसके अतिरिक्त यह पर्यवेक्षण यह सुनिश्चित करता है कि बैंक अपनी अपेक्षा से अधिक धन उधार न दें, क्योंकि इस तरह की कार्रवाई से संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में साख व्यवस्था की विविधता का उल्लेख कीजिए। **(CBSE 2020)**

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण (साख) की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत आदि पर काफी खर्च होता है। एक गाँव में विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं के लिए अलग-अलग साख या ऋण व्यवस्था हो सकती है; जैसे–

- **साहूकारों से ऋण** छोटे किसान गाँव के साहूकारों से ब्याज की उच्च दर पर पैसे उधार लेते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण वे कर्ज-जाल में फँस जाते हैं।
- **व्यापारियों से ऋण** किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि व्यापारियों से ऋण मिलता है। व्यापारियों को भी किसानों से उनकी फसल को बेचने का वादा मिलता है। इस तरीके से व्यापारी सुनिश्चित करता है कि धन लाभ कमाने के अतिरिक्त अदा भी किया जाता है। वह कम कीमत पर किसानों से फसल खरीदता है और जब कीमतें उच्च होती हैं, तो उसे बेचता है।
- **बैंकों से ऋण** मध्यम और बड़े किसान बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। बैंक ऐसे उधारकर्ताओं को अन्य सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।
- **नियोक्ता से ऋण** भूमिहीन कृषि मजदूर और अन्य मजदूर ऋण के लिए अपने नियोक्ताओं पर निर्भर रहते हैं। जमींदार प्रत्येक महीने 5% की ब्याज दर पर मजदूरों को ऋण देते हैं और ऋण के बदले वे जमीन मालिकों के लिए काम करते हैं।
- **सहकारी समितियों से ऋण** सहकारी समितियों के सदस्यों को कृषि उपकरण, खेती और कृषि व्यापार, मत्स्यपालन, घरों के निर्माण और अन्य खर्चों की खरीद के लिए ऋण प्रदान किया जाता है।

6. साख की शर्तें, समर्थक ऋणाधार एवं साख व्यवस्था की विविधता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर साख या ऋण से तात्पर्य एक सहमति से है, जहाँ ऋणदाता कर्जदार को धन, आवश्यक वस्तुएँ एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है और बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा लेता है। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियों में ऐसे बहुत-से लेन-देन होते हैं, जहाँ किसी-न-किसी रूप में ऋण का प्रयोग होता है।

साख की शर्तें साख की शर्तें उन परिस्थितियों या दशाओं का एक समूह है, जिनके अंतर्गत ऋण दिया जाता है। इसमें ऋण भुगतान के तरीके, ब्याज की दर, ऋण की अवधि और अन्य संबंधित दशाएँ शामिल हो सकती हैं। साख की शर्तों में समर्थक ऋणाधार अर्थात् गिरवी रखने के लिए कोई वस्तु एवं आवश्यक दस्तावेज शामिल हैं। साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं।

समर्थक ऋणाधार ब्याज के अतिरिक्त ऋणदाता समर्थक ऋणाधार की भी माँग कर सकते हैं। समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका मालिक ऋण लेने वाला होता है; जैसे—भूमि, गाड़ी, इमारत, पशु, बैंकों में पूँजी आदि।

इस संपत्ति का ऋणदाता इस स्थिति में प्रयोग कर सकता है जब ऋण लेने वाला व्यक्ति ऋण चुकाने में असमर्थ हो। ऋणदाता समर्थक ऋणाधार को बेचकर अपना भुगतान प्राप्त कर सकता है।

साख व्यवस्था की विविधता ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत आदि पर काफी खर्च होता है। एक गाँव में विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं के लिए अलग-अलग साख या ऋण व्यवस्था हो सकती है।

• केस स्टडी आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

ग्रामीण क्षेत्रों में साख की मुख्य माँग फसल उगाने के लिए होती है। फसल उगाने में बीज, खाद, कीटनाशक दवाओं, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत इत्यादि पर काफी खर्च होता है। इन आगतों को खरीदने और फसल की बिक्री होने के बीच कम-से-कम 3-4 महीने का अंतराल होता है। आमतौर से किसान ऋतु के आरंभ में फसल उगाने के लिए उधार लेते हैं और फसल तैयार होने के बाद वापस कर देते हैं। उधार की अदायगी मुख्यत: फसल की कमाई पर निर्भर है। स्वप्ना के मामले में फसल बर्बाद हो जाने से कर्ज की अदायगी असंभव हो गई। उसे कर्ज उतारने के लिए अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ा। ऋण ने स्वप्ना की कमाई को बढ़ाने के बजाय उसकी स्थिति बदतर कर दी। इसे आम भाषा में कर्ज–जाल कहा जाता है। इस मामले में ऋण कर्जदार को ऐसी परिस्थिति में धकेल देता है, जहाँ से बाहर निकलना काफी कष्टदायक होता है।

एक स्थिति में ऋण आय बढ़ाने में सहयोग करता है, जिससे व्यक्ति की स्थिति पहले से बेहतर हो जाती है। दूसरी स्थिति में, फसल बर्बाद होने के कारण ऋण व्यक्ति को अपने जाल में फँसा देता है। स्वप्ना को कर्ज उतारने के लिए अपनी जमीन का एक हिस्सा बेचना पड़ता है। स्पष्ट है कि उसकी स्थिति पहले की तुलना में बदतर हुई। ऋण उपयोगी होगा या नहीं, यह परिस्थिति के खतरों और हानि होने पर प्राप्त सहयोग की संभावना पर निर्भर करता है।

(i) **ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों के द्वारा ऋण लेने का प्रमुख कारण क्या है?**

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों के द्वारा ऋण मुख्य रूप से फसल की बुआई के समय लिया जाता है। इस ऋण का उपयोग वह कीटनाशक तथा कृषि यंत्रों को खरीदने में करता है। कृषक फसल की कटाई के पश्चात् ऋण की अदायगी कर देता है। हालाँकि उधार की अदायगी मुख्यतः फसल की कमाई पर निर्भर है।

(ii) **किन परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए ऋण-जाल बन जाता है?**

उत्तर जब कर्जदार द्वारा लिए गए ऋण को चुकाने में कर्जदार असमर्थ हो जाता है, तो वह ऋण-जाल के चक्रव्यूह में फँस जाता है। ऋण न चुकाने की असमर्थता परिस्थितियों की भिन्नता पर निर्भर करती है। ऋण कर्जदार को ऐसी परिस्थितियों में धकेल देता है, जहाँ से बाहर निकलना काफी कष्टदायक होता है।

(iii) **ऋण की शर्तों से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर प्रत्येक ऋण की शर्तों के अंतर्गत ब्याज की दर निश्चित की जाती है, जिसे कर्जदाता द्वारा मूल रकम के साथ अदा किया जाता है। इसके अतिरिक्त ऋणदाता समर्थक ऋणाधार की भी माँग कर सकता है, जिसका उपयोग वह उधारदाता को गारंटी देने के रूप में करता है।

2. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

बैंक जनता से जो धन जमा खातों में स्वीकार करते हैं, उसका क्या करते हैं? यहाँ एक दिलचस्प क्रियाविधि काम कर रही है। बैंक जमा रकम का एक छोटा हिस्सा अपने पास नकद के रूप में रखते हैं। उदाहरण के लिए, आजकल भारत में बैंक जमा का केवल 15 प्रतिशत हिस्सा नकद के रूप में अपने पास रखते हैं। किसी एक दिन में जमाकर्ताओं द्वारा धन निकालने की संभावना को देखते हुए यह प्रावधान किया जाता है। चूँकि किसी एक विशेष दिन में, केवल कुछ जमाकर्ता ही नकद निकालने के लिए आते हैं, इसलिए बैंक का काम इतने नकद से आराम से चल जाता है।

बैंक जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए इस्तेमाल करते हैं। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण की बहुत माँग रहती है। बैंक जमा राशि का लोगों की ऋण-आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस तरह, बैंक जिनके पास अतिरिक्त राशि है (जमाकर्ता) एवं जिन्हें राशि की जरूरत है (कर्जदार) के बीच मध्यस्थता का काम करते हैं। बैंक जमा पर जो ब्याज देते हैं उससे ज्यादा ब्याज ऋण पर लेते हैं। कर्जदारों से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज के बीच का अंतर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।

(i) **बैंक जनता द्वारा जमा किए गए धन को किस प्रकार विनियमित करता है?**

उत्तर बैंक जनता द्वारा जमा किए गए धन का कुछ हिस्सा नकद के रूप में अपने पास रखता है, जिसका उपयोग जमाकर्ताओं द्वारा धन निकालने की संभावना को पूरा करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त बैंक शेष बचे धन का उपयोग ऋणदाता को ऋण देने के लिए करता है।

(ii) **बैंक किस प्रकार एक मध्यस्थता के रूप में कार्य करते हैं?**

उत्तर बैंक जमाकर्ता द्वारा बैंक में जमा किए गए धन तथा ऋणदाता को दिए गए धन के बीच मध्यस्थता की भूमिका का निर्वहन करता है। बैंक जमाकर्ता को जो ब्याज देते हैं, उससे अधिक ब्याज वह अपने ऋण से प्राप्त करते हैं। दोनों के मध्य ब्याज का अंतर ही बैंक की आय का मुख्य स्रोत है।

(iii) **ऋण से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर ऋण से तात्पर्य ऐसे संबंधों से है, जहाँ बैंक व साहूकार, कर्जदार को धन उपलब्ध कराता है तथा बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा लेता है। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियों में ऐसे बहुत से लेन-देन होते हैं, जहाँ किसी-न-किसी रूप में ऋण का प्रयोग होता है।

3. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

स्रोत 'अ' औपचारिक क्षेत्रों से धन की प्राप्ति

भारत के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक मौजूद नहीं हैं। जहाँ कहीं मौजूद भी हैं, बैंक से कर्ज लेना अनौपचारिक स्रोत से कर्ज लेने की तुलना में ज्यादा मुश्किल है। जैसा कि हमने मेघा के मामले में देखा, बैंक से कर्ज लेने के लिए ऋणाधार और विशेष कागजातों की जरूरत पड़ती है। ऋणाधार की अनुपलब्धता एक प्रमुख कारण है, जिससे गरीब बैंकों से ऋण नहीं ले पाते।

(i) **ग्रामीण क्षेत्र में औपचारिक क्षेत्रों से अधिक ऋण क्यों नहीं लिया जाता है?**

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक क्षेत्रों से ऋण लेना अधिक मुश्किल होता है, जिसका प्रमुख कारण ऋण देने में देरी तथा विशेष कागजातों की व्यवस्था करना है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर लोगों के पास अपने ऋणाधार नहीं होते हैं, जिस कारण वे बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए आवश्यक कागज प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं।

स्रोत 'ब' अनौपचारिक क्षेत्रों से धन की प्राप्ति

अनौपचारिक ऋणदाता; जैसे—साहूकार इन कर्जदारों को व्यक्तिगत स्तर पर जानते हैं और इस कारण अक्सर बिना ऋणाधार के भी ऋण देने के लिए तैयार हो जाते हैं। कर्जदार जरूरत पड़ने पर पुराना ऋण चुकाए बिना भी नया कर्ज लेने के लिए साहूकार के पास जा सकते हैं, लेकिन महाजन ब्याज की दरें बहुत ऊँची रखते हैं, लेन-देन की लिखा-पढ़ी भी पूरी नहीं करते और निर्धन कर्जदारों को तंग करते हैं।

(ii) **ग्रामीण क्षेत्र में अनौपचारिक क्षेत्रों का सुदृढ़ होने का प्रमुख कारण क्या है?**

उत्तर ग्रामीण क्षेत्र में अनौपचारिक क्षेत्रों का सुदृढ़ होने का प्रमुख कारण अधिक मात्रा में ऋण प्रदान करना है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनौपचारिक ऋणदाता व्यक्तिगत स्तर पर सभी को जानता है, जिस कारण उसे ऋण देने में किसी प्रकार के वैधानिक कागज की आवश्यकता नहीं होती है। अतः वह अधिक मात्रा में ऋण देता है।

स्रोत 'स' स्वयं सहायता समूह द्वारा धन का प्रबंधन

हाल के वर्षों में, लोगों ने गरीबों को उधार देने के कुछ नए तरीके अपनाने की कोशिश की है। इनमें से एक विचार ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों विशेषकर महिलाओं को छोटे-छोटे स्वयं सहायता समूहों में संगठित करने और उनकी बचत पूँजी को एकत्रित करने पर आधारित है। एक विशेष स्वयं सहायता समूह में एक-दूसरे के पड़ोसी 15-20 सदस्य होते हैं, जो नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं।

(iii) **स्वयं सहायता समूह के द्वारा किस प्रकार ऋण दिया जाता है?**

उत्तर वर्तमान परिदृश्य के अनुरूप ग्रामीण क्षेत्रों में 15-20 व्यक्ति मिलकर एक स्वयं सहायता समूह बनाते हैं, जहाँ वे नियमित रूप से कुछ धन का संचय करते हैं, जिसका उपयोग वे अपने सदस्य को ऋण प्रदान करने में करते हैं। इस प्रकार, ऋण प्राप्त करना आसान होता है।

चैप्टर टेस्ट

• वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सहकारी समितियाँ किस क्षेत्र के स्रोत हैं?
(a) औपचारिक (b) अनौपचारिक (c) प्राथमिक (d) द्वितीयक

2. निम्न में से कौन-सा मुद्रा का कार्य है?
(a) ऋणदाता (b) विनिमय का माध्यम (c) बजट निर्माण (d) ब्याज दर

3. मुद्रा नोट कौन जारी करता है?
(a) भारत सरकार (b) वित्त मंत्रालय (c) रिजर्व बैंक (d) विदेशी विभाग

4. भारत में बैंक जमा का केवल ·········· हिस्सा नकद के रूप में अपने पास रखते हैं।
(a) 12% (b) 15% (c) 35% (d) 50%

5. **कथन** (A) आधुनिक समय में चैकों का प्रयोग उत्तम समझा जाता है।
कारण (R) चैक के माध्यम से बिना नकद का इस्तेमाल किए सीधा भुगतान किया जाता है।
कूट
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

• वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. "मुद्रा विनिमय का एक माध्यम है।" स्पष्ट कीजिए।

7. मुद्रा के लाभ बताइए।

8. मुद्रा के आधुनिक रूपों को बताइए।

9. स्वयं सहायता समूह का महिलाओं पर प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

10. "अधिकांश निर्धन परिवारों को ऋण के अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है।" व्याख्या कीजिए।

11. ग्रामीण बैंक की स्थापना का उद्देश्य बताइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

12. भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यों को विस्तारपूर्वक समझाइए।

13. ऋण-जाल शब्द की व्याख्या ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में उदाहरण सहित कीजिए।

14. 'स्वयं सहायता समूह' ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनों की सहायता किस प्रकार करता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर **1.** (a) **2.** (b) **3.** (c) **4.** (b) **5.** (a)